मध्यप्रदेश वन विभाग

मध्यप्रदेश वनांचल संदेश

अंक प्रथम, अक्टूबर-दिसम्बर, 2016

MADHYA PRADESH VANANCHAL SANDESH

Vol : 1, October-December, 2016

माननीय मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश श्री शिवराज सिंह चौहान
दीनदयाल वनांचल सेवा के शुभारंभ के अवसर पर उद्‌बोधन देते हुए।

माननीय वन मंत्री डॉ. गौरीशंकर शेजवार
अतंर्राष्ट्रीय हर्बल मेला, भोपाल के शुभारंभ के अवसर पर उद्‌बोधन देते हुए।

Owner & Patron :
Dr. Animesha Shukla
Principal Chief Conservator of Forest (HOFF), Satpura Bhawan, Bhopal

Editorial Board :
Shahbaz Ahmad
Principal Chief Conservator of Forest (Research & Extension and Lok Vaniki)
Y. Satyam
Additional Principal Chief Conservator of Forest (Development)
Sudhir Kumar
Additional Principal Chief Conservator of Forest (JFM)
Alok Kumar
Additional Principal Chief Conservator of Forest (Wildlife)
Abhay Kumar Patil
Additional Principal Chief Conservator of Forest (Research & Extension and Lok Vaniki)
Sameeta Rajora
Chief Conservator of Forest (Finance and Budget)
B. K. Dhar
Prachar Adhikari

Editor :
Sameeta Rajora, CCF

Prachar Prasar Prakoshth Team :
S.P. Jain, DCF
Rohan Saini

Contact :
Prachar Prasar Prakoshth,
Room no. 140, Satpura Bhawan, Bhopal
Email :
dcfpracharprasar@mp.gov.in
Contact : 07552524293

Published by :
Prachar Prasar Prakoshth

मध्यप्रदेश वनांचल संदेश

अंक प्रथम, अक्टूबर–दिसम्बर, 2016

विषय सूची

1. दीनदयाल वनांचल सेवा 1
2. नमामि देवि नर्मदे योजना 4
3. अनुभूति कार्यक्रम 5
4. वन्यप्राणी सप्ताह, 2016 7
5. अंतर्राष्ट्रीय हर्बल मेला, 2016 10
6. नवाचार :
   - रोजड़ा प्रबंधन 11
   - Training in Hospitality 12
   - बाबेर घास (*Eulaliopsis binata*) से रोजगार 12
7. विविधा :
   - हरियाणा के वन मंत्री का प्रदेश प्रवास 14
   - 22 वीं राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता 14
   - विभागीय गतिविधियाँ 15
   - The Kanha - Pench Corridor Walk 16
   - Wildlife Photography Contest 17
   - कृषि वानिकी सम्मलेन 18
   - Status Report - Tigers, co-predators, and prey in protected areas of Madhya Pradesh 2016 19
8. अखबारों के आईने में 20
9. प्रशंसा एंव पारितोषक 22
10. हरित साहित्य :
    - भारत का वन 24
    - नर्मदा गीत 25
11. Ecotourism 26
12. Promotions and Retirements 28

The views expressed in various articles belong to the authors of the article. Madhya Pradesh Forest Department may not agree with the views expressed by authors and will not be responsible for the correctness of the article. Madhya Pradesh Forest Department is not responsible for any liability arising out of context/text of the article published in this magazine.

No part of this magazine can be reproduced and published without the consent of the publisher of Madhya Pradesh Vananchal Sandesh.

All legal disputes will be covered under Bhopal jurisdiction, Madhya Pradesh.

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

संदेश

प्रसन्नता का विषय है कि वन विभाग द्वारा विभागीय गतिविधियों पर आधारित त्रैमासिक पत्रिका ''मध्यप्रदेश वनांचल संदेश'' का प्रकाशन किया जा रहा है।

वनांचल में रहने वाले आदिवासियों एवं ग्रामीणों की आजिविका वनों पर निर्भर है। वनों के आसपास रहने वाले व्यक्तियों के आर्थिक उत्थान के लिए संयुक्त वन प्रबंधन समितियों के सहयोग से अनेक गतिविधियॉ संचालित की जा रही है। दीनदयाल वनांचल सेवा के अंतर्गत ग्रामीणों के मध्य रह कर शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं में अपना सहयोग देने की पहल सराहनीय है। जनता और वन प्रशासन के बीच परस्पर संवाद के उद्देश्य से विभाग द्वारा त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन सराहनीय कदम है।

आशा है कि यह भविष्य के लिये संदर्भ स्रोत सिद्ध होगी।

शुभकामनाओं सहित।

शिवराज सिंह चौहान

डॉ. गौरीशंकर शेजवार
मंत्री
मध्यप्रदेश शासन
वन, योजना,
आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग

संदेश

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि विभाग द्वारा ''मध्यप्रदेश वनांचल संदेश'' शीर्षक से त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। वन एवं पर्यावरण संरक्षण तथा वनों पर निर्भर लोगों के विकास हेतु वन विभाग सदैव ही अग्रणी रहा है। वन विभाग के अधिकारी दूरस्थ ग्रामीण अंचलों में भी पदस्थ रहकर समर्पित भाव से अपनी सेवायें प्रदान करते है। विभाग द्वारा अभी हाल ही में अपनी जन हितैषी गतिविधियों को प्रसारित करते हुए जनता के स्वास्थ्य एवं शिक्षा संबंधी पहलुओं से भी जुड़ने हेतु कदम उठाये गये हैं। ऐसे सभी प्रयासों को अभिलेखित एवं रेखांकित करने की आवश्यकता है। वन विभाग द्वारा इसी तारतम्य में एक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन बहुत उपयुक्त कदम है।

इस सराहनीय प्रयास एवं त्रैमासिक पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिये मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

डॉ. गौरीशंकर शेजवार

सूर्य प्रकाश मीणा
राज्यमंत्री
मध्यप्रदेश शासन
उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण
(स्वतंत्र प्रभार) एवं वन

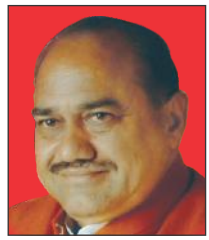

संदेश

आदिवासी एवं ग्रामीणों के सतत् विकास हेतु वन विभाग अन्य विभागों एवं संस्थाओं के समन्वय एवं सहयोग से सदैव से प्रयासरत रहा है। जनहित में विभाग के ऐसे सभी प्रयास एवं गतिविधियां सराहनीय है। योजनाबद्ध वन प्रबंधन के साथ ही जन हितैषी गतिविधियों का त्रैमासिक पत्रिका के माध्यम से अभिलेखन बहुत ही अच्छा प्रयास है।

मेरी ओर से इस प्रयास हेतु सभी को हार्दिक बधाई।

सूर्य प्रकाश मीणा

बसंत प्रताप सिंह
मुख्य सचिव
मध्यप्रदेश शासन

संदेश

वन प्रबंधन के विभिन्न आयाम हैं। योजनाबद्ध तरीके से वनों के प्रबंधन के साथ ही वन विभाग के समक्ष आकस्मिक समस्याओं एवं आपदाओं की चुनौतियां अक्सर उत्पन्न होती रहती है। वन विभाग ऐसी चुनौतियों का हमेशा दृढ़ता एवं सक्षमता से सामना करता आया है।

यह जानकर बहुत हर्ष हुआ कि अपने जनोन्मुखी प्रयासों को अभिलिखित करने एवं जनता से एक संवाद का अतिरिक्त माध्यम निर्मित करने के उद्देश्य से एक त्रैमासिक पत्रिका के प्रकाशन करने का निर्णय लिया गया है। इस सराहनीय प्रयास के लिए संपादक मण्डल के सभी सदस्यों को मेरी ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं ।

बसंत प्रताप सिंह

दीपक खाण्डेकर
अपर मुख्य सचिव
वन विभाग, मध्यप्रदेश शासन

संदेश

वनों के वैज्ञानिक प्रबंधन के साथ ही वन विभाग द्वारा सामाजिक व आर्थिक उत्थान की अनेक गतिविधियां क्रियान्वित की जा रही हैं। यह सभी गतिविधियां अन्य संबंधित विभागों एवं संस्थाओं के सहयोग के साथ समन्वय एवं जनता के सहयोग से संचालित की जा रही हैं। विभाग की सभी गतिविधियां अंततः आम जनता की आजिविका एवं उनके सामाजिक व आर्थिक उत्थान से संबंधित है।

विभाग द्वारा त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है, जिसके माध्यम से विभाग की गतिविधियों का अभिलेखन एवं प्रचार होगा एवं साथ ही विभाग के समस्त चुनौतीपूर्ण कार्यो को रेखांकित भी किया जा सकेगा। त्रैमासिक पत्रिका के प्रकाशन के माध्यम से जनता एवं विभाग के बीच एक बेहतर संवाद कायम करने में सहायता मिलेगी। मेरी ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

दीपक खाण्डेकर

डॉ अनिमेष शुक्ला
प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं
वन बल प्रमुख, वन विभाग
मध्यप्रदेश शासन

संदेश

वनों का वैज्ञानिक प्रबंधन, कृषकों का कल्याण, वनांचल में रहने वाले ग्रामीणों का उत्थान आदि वन विभाग की प्राथमिक गतिविधियॉ रही हैं। अभी हाल ही में वनों के आसपास रहने वाले ग्रामीणों की शिक्षा एवं स्वास्थ्य की सेवाओं में सहयोग हेतु विभाग द्वारा दीनदयाल वनांचल सेवा शुरू की गई है एवं इसे एक अभियान के रूप में क्रियान्वित किया जा रहा है।

वन विभाग के ऐसे प्रयास अक्सर अभिलेखित नहीं हो पाते हैं एवं इसकी महत्ता का आभास नहीं हो पाता है। एक त्रैमासिक पत्रिका के प्रकाशन से विभाग के जनहित के सभी प्रयासों का विस्तार हो सकेगा एवं साथ ही यह पत्रिका जनता एवं विभाग के बीच विचारों के आदान–प्रदान हेतु एक सेतु का कार्य करेगी। इस पत्रिका के प्रकाशन हेतु एक अलग से प्रकोष्ठ भी स्थापित किया गया है।

मेरी ओर से पत्रिका के संपादक मण्डल के सभी सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाऐं।

डॉ अनिमेष शुक्ला

सम्पादकीय

मध्यप्रदेश वन विभाग की स्थापना 1860 में हुई थी। प्रथम वन नीति 1894 में बनी और तब से आज तक वनों के वैज्ञानिक प्रबंधन की गौरवशाली परम्परा लागू है। मध्यप्रदेश के वन जैवविविधता, मृदा, जल, जलवायु, कृषि, वनाधारित जीविकोपार्जन के स्त्रोतों के संरक्षक हैं। इनके संरक्षण में विभागीय अमले के साथ–साथ वनों के आसपास रहने वाले आदिवासियों एवं अन्य ग्रामीणों का भी महत्वपूर्ण योगदान है। मध्यप्रदेश में 94 हजार 689 वर्ग किलोमीटर वन है, और वनों के प्रबंधन में स्थानीय समुदाय की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए शासन के संकल्प द्वारा 90 के दशक में संयुक्त वन प्रबंधन समितियां गठित की गई थी। वनों की सीमा से 5 कि.मी. की दूरी तक के ग्रामों में 15 हजार 228 संयुक्त वन समितियॉ कार्यरत हैं। मध्यप्रदेश वन विभाग, वनो के प्रबंधन में स्थानीय समुदाय की भागीदारी सशक्त बनाए रखने की दृष्टि से "citizen centric" या कहें "स्थानीय समुदाय केन्द्रित" गतिविधियों पर विशेषकर समर्पित है। इकोपर्यटन बोर्ड द्वारा संचालित "अनुभूति" का अद्‌भुत अभियान हो, वन्यप्राणी सप्ताह के आयोजन हों या फिर दीनदयाल वनांचल सेवा के तहत हो रहे दूरस्थ वनांचलों में स्वास्थ्य कैम्प, मध्यप्रदेश वन विभाग ने अंतर्विभागीय तालमेल से "स्वस्थ जन–स्वस्थ वन" की अवधारणा को धरा पर उतारने एवं प्रदेश की आगामी पीढ़ी तक पर्यावरण, वनों एवं वन्यप्राणियों की सुरक्षा एवं संवर्धन की जागृति को फैलाने के लिए ऐसे कार्यों को, एक मिशन की तरह अपना लिया है।

"मध्यप्रदेश वनांचल संदेश" एक त्रैमासिक पत्रिका का शुभारम्भ भी विभाग की जनसंपर्क में वृद्धि और संवाद स्थापित करने का प्रयास है। पर्यावरण, वनों एवं जनहित में समर्पित विभागीय प्रयासों को एक त्रैमासिक पत्रिका के माध्यम से प्रस्तुत करने के इस प्रयास में प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख के निर्देशन, सम्पादकीय मण्डल के सदस्यों के मार्गदर्शन एवं प्रचार प्रसार प्रकोष्ट के सदस्यों के सहयोग के लिए कृतज्ञ हूँ।

आशा है आपको यह प्रयास पसंद आएगा।

शुभकामनाओं सहित,

Sameeta Rajora

समीता राजोरा

दीनदयाल वनांचल सेवा

स्वस्थ जन-स्वस्थ वन की ओर एक कदम

दीनदयाल वनांचल सेवा एक नवाचार पूर्ण अभिनव योजना है, जिसमें सुदूर वनांचलों में निवासरत ग्रामीणों, विशेषकर वनवासियों के स्वास्थ्य, शिक्षा, कुपोषण आदि जैसी समस्याओं के निराकरण में वन विभाग द्वारा सेवाभाव से अन्य विभागों के साथ समन्वय कर सहयोग किया जाना है। दीनदयाल वनांचल सेवा का शुभारंभ 20 अक्टूबर 2016 को श्री शिवराज सिंह चौहान, माननीय मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश के करकमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर माननीय श्री गौरीशंकर शेजवार, मंत्री, वन, मध्यप्रदेश शासन, श्रीमती अर्चना चिटनिस माननीय मंत्री, महिला एवं बाल विकास, श्री दीपक खाण्डेकर, अपर प्रमुख सचिव वन, श्रीमती गौरी सिंह प्रमुख सचिव स्वास्थ्य, श्री जे. एन. कंसोटिया प्रमुख सचिव महिला एवं बाल विकास, श्री अशोक शाह, प्रमुख सचिव आदिमजाति कल्याण विभाग, डॉ. अनिमेष शुक्ला प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख के साथ वन विभाग एवं अन्य विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे, जिन्होंने इस योजना को अतंर्विभागीय तालमेल से सफल बनाने की प्रतिबद्धता दिखाई।

यह योजना वन सुरक्षा एवं विकास के साथ सुदूर वनांचलों में पदस्थ वनकर्मियों के सहयोग से वनवासियों के कल्याण एवं सेवा का एक अभिनव प्रयास है। मध्यप्रदेश में 94 हजार 689 वर्ग किलोमीटर वन है और वनक्षेत्र से 5 कि.मी. दूरी तक के ग्रामों में 15 हजार 228 संयुक्त वन प्रबंधन समितियां कार्यरत है। स्थानीय लोगों का वनों की सुरक्षा एवं विकास में सहयोग प्राप्त करने की दृष्टि से बनाई गई यह समितियां दूर वनांचलों में

स्थित हैं और इन समितियों के सदस्यों व ग्रामीणों से वनविभाग के कर्मचारियों का सतत् सम्पर्क बना रहता है। अतः वनांचलों में जहां अन्य विभागों की पहुँच कम हैं, वहां शिक्षा, स्वास्थ्य एवं पोषण इत्यादि में वन विभाग के सहयोग से बेहतर सुविधायें उपलब्ध कराई जा सकती है। यह योजना "स्वस्थ जन–स्वस्थ वन" की अवधारणा पर आधारित है। इस योजना के तहत सुदूर वनांचलों में पदस्थ वनकर्मियों द्वारा लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, महिला बाल विकास विभाग, स्कूल शिक्षा विभाग एवं आदिम जाति कल्याण विभाग में प्रचलित विभिन्न कार्यक्रमों एवं विभागीय योजनाओं का लाभ वनांचल में निवासरत ग्रामीणों तक पहुचानें में सहयोग किया जाना लक्षित है।

योजना के क्रियान्वयन हेतु स्वास्थ्य विभाग द्वारा एक विशेष वनरक्षक स्वास्थ्य प्रशिक्षण मॉड्यूल तैयार किया गया, जिसका विमोचन माननीय मुख्यमंत्री द्वारा किया गया। स्वास्थ्य विभाग द्वारा वनरक्षकों के स्वास्थ्य उन्मुखिकरण प्रशिक्षण के लिये प्रदेश स्तर पर मास्टर ट्रेनर्स (आशा) को प्रशिक्षित कर विभिन्न वनमंडलों के साथ संलग्न किया गया। यह योजना अतंर्विभागीय समन्वय का एक अभूतपूर्व उदाहरण है। इसके क्रियान्वयन के लिए वन विभाग के विभागाध्यक्ष एवं सहयोगी विभागों के विभाग प्रमुखों के संयुक्त हस्ताक्षर से मार्गदर्शी निर्देश जारी किये गये है। क्षेत्रीय स्तर पर इस योजना के तहत 31 दिसम्बर तक, विभिन्न वृत्तों में एवं राष्ट्रीय उद्यानों में 107 अतंर्विभागीय बैठकों, प्रशिक्षणों एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया जा चुका है।

अब तक सुदूर वनांचलों में एवं वनग्रामों में 134 स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन हुआ है एवं 15 हजार 319 वनवासी लाभान्वित हुये है। इन शिविरों के माध्यम से मातृ मृत्यु दर एवं शिशु मृत्यु दर कम करने, जटिल बीमारियों से ग्रसित मरीजों को निकटतम अस्पताल पहुँचाने, गर्भवती महिलाओं का परीक्षण कराने, महामारी की सूचना देने, टीकाकरण कराने, मलेरिया उन्मूलन, किशोरी बालिकाओं का स्वास्थ्य सुधार, कुपोषण दूर कराने के प्रयास किये जा रहे है। वनांचलों में स्कूल शिक्षा एवं आदिमजाति कल्याण विभाग द्वारा संचालित

शालाओं में आगामी वर्षा ऋतु तक पौधा रोपण एवं पौधों की देखभाल करने की प्रेरणा देने की गतिविधियां संचालित की जायेंगी। वनांचलों के स्कूलों में वनकर्मी स्वच्छता एवं पर्यावरण संबंधी चर्चा करने लगे हैं। महिला बाल विकास विभाग द्वारा वनग्रामों व संवेदनशील क्षेत्रों में वनविभाग को आंगनबाड़ी निर्माण की एजेंसी नियुक्त करते हुए 42 स्थानों पर आंगनबाड़ी निर्माण का कार्य स्वीकृत किया गया है। दीनदयाल वनांचल सेवा

वनग्राम बरिहा–बिछिया, मण्डला

का प्रचार–प्रसार अन्तर्राष्ट्रीय वन मेला 2016 में भी प्रदर्शनी लगाकर किया गया। इस योजना के अन्तर्गत कार्यक्रमों एवं आयोजनों के माध्यम से न केवल अतंर्विभागीय तालमेल बढ़ रहा है, बल्कि विभिन्न विभागों की योजनाओं पर समझ एवं दुर्गम वनांचलों के रहवासियों तक लाभ पहुंचाने के सतत् प्रयास भी किये जा रहे है।

दीनदयाल वनांचल सेवा की अल्प सम्पादन अवधि में संयुक्त वन प्रबंधन समितियों में उत्साह का संचार हुआ है। मध्यप्रदेश में संयुक्त वन प्रबंधन समितियॉ और वनकर्मी वनों के संरक्षण और विकास में अत्याधिक महत्वपूर्ण कार्य करते आ रहे हैं। अब सुदूर वनांचलों में वनवासियों के स्वास्थ्य, सुपोषण, शिक्षा और आदिमजाति कल्याण के विभिन्न कार्यक्रमों में वन कर्मचारी तथा अधिकारी सेवाभाव, अंतर्विभागीय तालमेल एवं सक्रिय सहयोग से उत्साहजनक परिणाम लाने के लिए सतत् प्रयासरत हैं।

नमामि देवि नर्मदे योजना

नर्मदा नदी के किनारे होंगे हरे भरे

नर्मदा नदी के जल की अविरलता तथा उसकी गुणवत्ता एवं जैवविविधता को बनाये रखने के लिये मध्यप्रदेश सरकार की "नमामि देवी नर्मदे" योजना के अंतर्गत मध्यप्रदेश वन विभाग के द्वारा नदी के दोनों तटों से एक–एक कि.मी. तक की दूरी की कृषि भूमियों पर वृक्षारोपण कार्य प्रस्तावित किया गया है। नर्मदा नदी प्रदेश के आठ वन वृत्तों के उन्नीस वन मण्डलों (सोलह जिलों) एवं तिरपन वन परिक्षेत्रों से होकर प्रवाहित होती है। योजना में सम्मिलित क्षेत्र की 479 ग्राम पंचायतों के 882 ग्रामों के 1,18,085 कृषक परिवारों को इसका भागीदार बनाया जावेगा। नर्मदा सेवा यात्रा का शुभारंभ प्रदेश के माननीय मुख्य मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के करकमलों से अनूपपुर जिले के पुष्पराजगढ़ विकासखण्ड में दिनांक 11 दिसम्बर 2016 को किया गया। अगले दिन यह यात्रा डिंडोरी जिले में पहुँची जहाँ जिले के करंजिया, बजाग, डिंडोरी, अमरपुर एवं महेन्दवानी विकासखण्ड में नर्मदा के किनारे वृक्षारोपण, जन जागरूकता के कार्यक्रम 19 दिसम्बर तक किये गए। इसके बाद यह यात्रा 19 दिसम्बर को मण्डला जिले में पहुॅची जहा नदी के किनारे स्थित मोहगांव, बिछिया एवं मण्डला में नदी संरक्षण के कार्यक्रम आयोजित किये गए। सिवनी जिले में ''नमामि देवि नर्मदे'' यात्रा 23 से 25 दिसम्बर तक आयोजित की गयी। यह यात्रा अमरकंटक से शुरू होकर 144 दिनों में सोंडवा होकर वापस अमरकंटक में पूर्ण होगी। इस यात्रा के माध्यम से वृक्षारोपण, स्वच्छता, मृदा एवं जल संरक्षण, नदी किनारे प्रदूषण नियंत्रण के उपाय एवं जैविक खेती को बढ़ावा देने का संदेश प्रसारित कर इन गतिविधियों को सफलता पूर्वक अपनाने को प्रोत्साहित किया जा रहा है।

अनुभूति कार्यक्रम

15 दिसम्बर, 2016 से 15 जनवरी, 2017 तक
एक अनोखी पहल

मध्यप्रदेश प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण प्रदेश है, जिसके संरक्षण हेतु यह आवश्यक है कि जन सामान्य में वन, वन्यप्राणी एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता विकसित की जाए। स्कूली विद्यार्थियों की इस संकल्प की पूर्ति में अहम भूमिका है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु मध्यप्रदेश शासन, वन विभाग द्वारा ''अनुभूति कार्यक्रम'' वर्ष 2016–17 (15, दिसम्बर, 2016 से 15 जनवरी, 2017) की परिकल्पना की गई। वन विहार राष्ट्रीय उद्यान, भोपाल में वन्यप्राणी सप्ताह में दिनाँक 07 अक्टूबर, 2016 को माननीय वन मंत्री जी द्वारा की गई घोषणा के अनुरूप यह कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है।

वन क्षेत्रों में स्कूली विद्यार्थियों के भ्रमण के लिये अनुभूति कार्यक्रम को संचालित करने के लिए प्रधान मुख्य वन संरक्षक, म.प्र. एवं वन बल प्रमुख द्वारा सभी क्षेत्रीय मुख्य वन संरक्षकों को परिपत्र एवं वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से निर्देश जारी किये गये तथा प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी) द्वारा सभी क्षेत्र संचालकों को कार्यक्रम के सुचारू रूप से आयोजन हेतु निर्देश प्रसारित किये गये। कार्यक्रम में जिला प्रशासन एवं अन्य विभागों का सहयोग उपलब्ध कराने हेतु अपर मुख्य सचिव, म.प्र. शासन, वन विभाग द्वारा सभी सम्भागायुक्तों एवं कलेक्टरों को निर्देश दिये गये।

यह कार्यक्रम मध्यप्रदेश ईकोपर्यटन विकास बोर्ड के माध्यम से संचालित किया जा रहा है। अनुभूति कार्यक्रम वर्ष 2016–17, 15 दिसम्बर,

2016 से 15 जनवरी, 2017, तक प्रदेश के 393 परिक्षेत्रों में आयोजित किया जा रहा है। प्रत्येक परिक्षेत्र में कक्षा 5वीं से 11वीं तक के लगभग 130 विद्यार्थी भाग लेंगे। इस एक माह के कार्यक्रम में प्रदेश भर से 51,000 से अधिक स्कूली विद्यार्थियों द्वारा भाग लिया जाएगा।

इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्रत्येक वन वृत्त में मास्टर ट्रेनर्स की टीम तैयार की गई, जिन्हें प्रदेश के विभिन्न टाइगर रिजर्व में विषय विशेषज्ञों के माध्यम से प्रशिक्षित किया गया है। इन मास्टर ट्रेनर्स द्वारा परिक्षेत्र स्तर पर विभागीय मार्गदर्शन में अनुभूति कार्यक्रम का आयोजन कराया जा रहा है।

31 दिसम्बर, 2016 तक 215 परिक्षेत्रों में 27,000 से अधिक स्कूली विद्यार्थी इस कार्यक्रम में सम्मिलित हो चुके है।

अनुभूति कार्यक्रम 2016–17 में सम्मिलित स्कूली विद्यार्थियों ने प्रकृति भ्रमण, पक्षी दर्शन, वन प्रबंधन, वनऔषधी, जैवविविधता, जल संरक्षण एवं संवर्धन के महत्व को प्रकृति के मध्य रहकर अनुभव किया। साथ ही स्वच्छता एवं स्वास्थ्य विषयक जानकारी भी प्राप्त की। विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक कार्यक्रम में प्रतिभागिता की। अनुभूति कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों ने अपनी कला–कौशल का प्रदर्शन करते हुए सांस्कृतिक कार्यक्रम में भी भाग लिया। विद्यार्थियों द्वारा वन, पर्यावरण पर आधारित प्रश्नोत्तरी में भी प्रतिभागिता की गई।

इस प्रकार के आयोजनों से निश्चित ही विद्यार्थियों मे वन एवं पर्यावरण के प्रति जागरूकता विकसित होगी। भविष्य में ये स्कूली विद्यार्थी वन संरक्षण एवं ईकोपर्यटन के संदेश को जन–जन तक पहुँचाने के लिए शक्तिशाली

प्रचारक सिद्ध होंगे, जिससे अनुभूति कार्यक्रम के लक्ष्यों की पूर्ति होगी। वन विभाग इस कार्य को एक मिशन के रूप में पूर्ण प्रतिबद्धता से करने हेतु समर्पित है।

वन्यप्राणी सप्ताह 2016

1-7 अक्टूबर, 2016

वन्यप्राणी सप्ताह 2016 का शुभारंभ डॉ. गौरीशंकर शेजवार, मान्नीय मंत्री, वन, योजना, आर्थिक एवं सांख्यिकी, मध्यप्रदेश शासन एवं श्री सूर्यप्रकाश मीणा, माननीय वन राज्य मंत्री, मध्यप्रदेश शासन द्वारा 1 अक्टूबर, 2016 को वन विहार राष्ट्रीय उद्यान, भोपाल में दीप प्रज्जवलित कर किया गया।

वन्य प्राणी सप्ताह में वन्यप्राणी संरक्षण एवं जागरूकता से सम्बंधित विभिन्न प्रकार के आयोजन सम्पूर्ण प्रदेश मे किये गए। वन विहार, भोपाल में प्रत्येक दिन आयोजित गतिविधियों की झलकियां प्रस्तुत हैं –

01-10-2016

वन्यप्राणी सप्ताह के प्रथम दिन वन विहार राष्ट्रीय उद्यान स्थित विहार वीथिका में चित्रकला प्रतियोगिता संपन्न हुई। इसमें कक्षा एक से कक्षा बारहवीं तक के विभिन्न स्कूलों के बच्चों ने भाग लिया। भोपाल के सामान्य नागरिक एवं दिव्यांग बच्चों ने भी बढ़ चढ़ कर उत्साह से भाग लिया। प्रतियोगिता में 51 शिक्षण संस्थाओं के 1788 प्रतिभागियों ने वन्यप्राणी तथा प्रकृति से जुड़े विषयों पर चित्रकारी की।

02-10-2016

- पक्षी अवलोकन शिविर का आयोजन किया गया।
- "पर्यावरण स्वच्छता में गिद्धों की भूमिका" विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें आधिकारियों के द्वारा गिद्धों के संरक्षण, संवर्धन एवं पर्यावरण में गिद्धों की भूमिका के बारे में विस्तार से बताया गया।
- एक अन्य कार्यक्रम में सर्प विशेषज्ञ मो. सलीम द्वारा सर्पों का प्रदर्शन किया गया एवं सर्पों के बारे में फैली विभिन्न भ्रांतियों को दूर करते हुये महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराई।

03-10-2016

- फोटोग्राफी प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें 67 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
- "वन्यप्राणी संरक्षण में शिक्षकों की भूमिका" विषय पर विद्यालयीन एवं महाविद्यालयीन शिक्षकों की कार्यशाला सम्पन्न हुई।

04-10-2016

- रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
- ''संरक्षित क्षेत्रों में बढ़ता पर्यटन वन्यप्राणी संरक्षण के लिये घातक है" विषय पर विद्यालयीन वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

05-10-2016

- महाविद्यालयीन छात्र–छात्राओं की वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें विभिन्न महाविद्यालयों के 32 प्रतिभागियों द्वारा "पर्यावरण संरक्षण विकासशील राष्ट्रों की जिम्मेदारी है" विषय पर पक्ष एवं विपक्ष में अपने विचार व्यक्त किये।

06-10-2016

- स्कूली बच्चों हेतु सृजनात्मक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न विद्यालयों के कुल 127 बच्चों ने भाग लिया।
- प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का सेमीफाइनल एवं फाइनल आयोजित किया गया, जिसमें फाइनल में चार टीमें पहुंची।

07-10-2016

- विद्यालयीन छात्रों हेतु वन्यप्राणियों पर आधारित फेंसी ड्रेस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न विद्यालयों के 68 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
- वन्यप्राणी सप्ताह 2016 का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह वन विहार राष्ट्रीय उद्यान, भोपाल में डॉ. गौरीशंकर शेजवार, मान्नीय मंत्री, वन, योजना, आर्थिक एवं सांख्यिकी, मध्यप्रदेश शासन के मुख्य आतिथ्य में आयोजित किया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय हर्बल मेला, 2016

अन्तर्राष्ट्रीय हर्बल मेला, 2016 का आयोजन लाल परेड ग्राउंड, जहांगीराबाद, भोपाल में दिनांक 20 से 24 दिसम्बर तक किया गया। इस वन मेले की थीम ''लघु वनोपज : संवर्धन एवं सतत् आजीविका हेतु साझेदारों के हितों का सुदृढ़ीकरण''(''NTFPs : Strengthening Multi Stake holder's Linkages for Conservation and Sustainability of Livelihood") रखी गई।

लघु वनोपजों के महत्व को जन–जन तक पहुंचाने तथा आयुर्वेदिक चिकित्सा को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से सर्वप्रथम वर्ष 2001 मे भोपाल में वन मेले का आयोजन प्रारम्भ किया गया था। वन मेले की लोकप्रियता को देखते हुये वर्ष 2011 से इसे अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप देकर ''अन्तर्राष्ट्रीय हर्बल मेला'' (वन मेला) के रूप में आयोजित किया जाता रहा है।

संग्राहक, स्थानीय व्यापारी, वैद्य, दवाई कंपनी के निर्माता एवं उपभोक्ताओं के संयुक्त प्रयासों से यह वन मेला सम्पन्न हुआ। अन्तर्राष्ट्रीय हर्बल मेला (वन मेला) में प्रदेश, प्रदेश के बाहर तथा बांग्लादेश, नेपाल एवं मलेशिया के आयुर्वेदिक एवं हर्बल उत्पादों के उत्पादक, विपणन कर्ता, उद्यमी, इस क्षेत्र में कार्यरत संस्थाऐं एवं प्राथमिक वनोपज सहकारी समितियों ने उपस्थित होकर अपने स्टाल मेले में लगाये तथा वनोपजों, वनोत्पादों तथा औषधियों की बिक्री की।

मेले के समापन तक विभिन्न स्टालों से लगभग 70.00 लाख रूपये की बिक्री हुई, जो अपने–आप में एक रिकार्ड है।

नवाचार

वन्यप्राणी प्रबंधन में नया अध्याय : बोमा (ऐंरा) पद्धिति से रोजड़ों को पहुँचाया संरक्षित क्षेत्र में।

पिछले कुछ वर्षों में रोजड़ो (नीलगाय) की संख्या तेजी से बढ़ी है और एक अनुमान के अनुसार मध्यप्रदेश के राजस्व क्षेत्रों में विचरण करने वाले 30 हजार से ज्यादा रोजड़े किसानों के लिए बड़ी समस्या बन गए हैं।

लंबे समय से रोजड़ों से मुक्ति दिलाने की मांग कर रहे मध्यप्रदेश के किसानों की कठिनाई को समझते हुए मध्यप्रदेश वन विभाग इसके हल खोजने के लिए निरंतर प्रयासरत था। विगत वर्षों में मध्यप्रदेश वन विभाग द्वारा शाकाहारी वन्यप्राणियों को पकड़ने एवं स्थानांतरण करने के नवीन प्रतिमान स्थापित किये गये हैं और गौर, चीतल एवं बारहसिंघा को प्रबंधकीय आवश्यकताओं के अनुसार एक स्थान से पकड़कर नवीन स्थल पर सफलतापूर्वक स्थानांतरित किया गया है। इन अभियानों में मिली सफलता के आधार पर यह तय किया गया कि रोजड़ों को भी दक्षिण अफ्रीका की बोमा पद्धति से पकड़कर संरक्षित वन क्षेत्रों में छोड़ा जाएं।

बोमा एक 'वी' आकार का विशाल बाड़ा होता है जो क्रमशः आगे संकरा होता जाता है। बाड़े में जैसे–जैसे वन्य प्राणी आगे बढ़ता जाता है उसके पीछे पर्देनुमा द्वार बंद किए जाते हैं। अंततः रास्ता उस ट्रक में खुलता है जिसमें वन्यजीवों को अन्यत्र ले जाना होता है। यह एक अत्यन्त चुनौतीपूर्ण कार्य है। इस कार्यक्रम में वरिष्ट अधिकारियों व स्थानीय ग्रामीणों का सहयोग रहा। इस कार्य में घोड़ों के साथ हेलीकाप्टर का भी प्रयोग किया गया। यह पूरी कार्यवाही दो दिन में पूर्ण हुई।

मंदसौर वनमंडल के रोजड़ा प्रभावित क्षेत्र के गांव 'ऐंरा' को इस प्रयोग के लिए चुना गया। भारतीय वन्यजीव संरक्षण के इतिहास में 16 दिसंबर को नया अध्याय लिखा गया जब देश में पहली बार फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले 19 रोजड़ों के दो झुंड खुले इलाकों से सुरक्षित पकड़ लिये गये और उन्हें चंबल नदी के किनारे स्थित गांधी सागर अभ्यारण्य मे सफलतापूर्वक मुक्त कर दिया गया। इस से ग्रामीणों में हर्ष व्याप्त है, और वन विभाग का यह अदभुत सफल प्रयास सर्वत्र सराहा जा रहा है। इस पद्धति कों अब ''ऐंरा पद्धति'' का नाम दिया गया है।

Training in Hospitality

The Kanha National Park management has made a novel effort to help youth from villages within the tiger reserve to provide employment commensurate with a new set of skills imparted to them with professional help. The management has entered into a tripartite agreement with the Indian Hotel Company Ltd. and PRATHAM Education Foundation to select eligible youth from such villages and train them in hospitality skills. This training is being imparted at the Khatia Hospitality Centre. After the completion of this training, these youth get good opportunities for employment in the hospitality sector. So far, 10 such batches have passed out and all of them are well placed. Mr. Sanjay Kumar Shukla, Field Director, Kanha Tiger Reserve, on 29th November, 2016, gave away certificates and employment letters to 34 passouts of the 10th batch. Around 350 boys and girls have been benefited by this programme so far, and families of such successful youth are extremely happy with this initiative.

बाबेर घास *(Eulaliopsis binata)* से रोजगार

सतपुडा बाबेर रस्सी निर्माण समिति, गोटीटोरिया के रस्सी निर्माण केन्द्र की स्थापना दिसम्बर 2003 में की गई। ग्राम वन समिति गोटीटोरिया, वनपरिक्षेत्र गाडरवाडा वनमण्डल नरसिंहपुर द्वारा आयोजित आम सभा में ऐसे हितग्राहियों को मशीन चलाने के लिए चुना गया जो बेरोजगार, भूमिहीन गरीब परिवार से थे। इन्हीं हितग्राहियों में से अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं कार्यकारिणी समिति का चुनाव किया जाता रहा है। इस केन्द्र की गतिविधियों के अंर्तगत नरसिंहपुर, छिंदवाड़ा एवं होशंगाबाद जिले के वनांचलों से स्थानीय निवासियों द्वारा बाबेर (सवई) घास काटकर गोटीटोरिया केन्द्र में विक्रय हेतु लायी जाती है।

आदिवासी परिवारों द्वारा लाई गई घास संग्रहण स्थल में वन कर्मचारियों द्वारा तुलवाकर खरीदी जाती है एवं प्रति किलों के आधार पर भुगतान किया जाता है। खरीदी गई बाबेर घास का गोदाम में

भंडारण किया जाता है। यह भण्डारित घास केन्द्र में लगी 30 मशीनों के हितग्राहियों को बांटी जाती है जो रस्सी का निर्माण करते हैं। प्रत्येक सप्ताह विद्युत चलित मशीन, पैडल मशीन, एवं हस्त निर्मित रस्सी को तौल कर अलग–अलग स्वीकृत दरों पर खरीद कर भण्डारित किया जाता है। इस प्रकार क्रय की गई रस्सी को अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक (उत्पादन) म.प्र. भोपाल द्वारा आदेशित वनमंडलो को वनमंडल अधिकारी नरसिंहपुर के माध्यम से चालान द्वारा भेज दिया जाता है। वन मण्डलों को सवई रस्सी निर्माण कर प्रदाय किये जाने हेतु अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक (उत्पादन) म.प्र. भोपाल से वनमंडल, नरसिंहपुर को आवंटन प्राप्त होता है। यह राशि वनमंडल अधिकारी नरसिंहपुर द्वारा सवई रस्सी निर्माण समितियों के खाते में आवश्यकता अनुसार जमा करा दी जाती है। इस योजना से वनों एवं स्थानीय वनांचल में निवासरत ग्रामीणों के 56 परिवारों को सालाना लगातार रस्सी निर्माण से रोजगार उपलब्ध होता है। प्रत्येक वर्ष लगभग 50,000 कि.ग्राम घास, रस्सी निर्माण हेतु काटकर लायी जाती है, जिसे रू. 5,00,000/– में क्रय किया जाता है। इसके अतिरिक्त लगभग 300 आदिवासी परिवारों को 5 माह, नवम्बर से मार्च तक, घास कटाई के माध्यम से रोजगार उपलब्ध होता है। बाबेर घास से रस्सी निर्माण में लगभग रु. 11,50,000/– की सालाना आय स्थानीय वनवासियों को होती है। इससे सुदूर वनांचलों में निवासरत आदिवासियों तथा अन्य गरीब परिवारों की आर्थिक स्थिति में सुधार हो रहा है।

विविधा

हरियाणा के वन मंत्री का प्रदेश प्रवास

हरियाणा में इकोटूरिज्म विकसित करने के उद्देश्य से हरियाणा सरकार के माननीय वनमंत्री राव नरबीर सिंह ने अपने राज्य के वन एवं पर्यटन क्षेत्र से जुड़े अधिकारियों के साथ डुमना नेचुरल रिजर्व बरगी और भेड़ाघाट एवं कान्हा टाइगर रिजर्व का दौरा किया। उन्होंने डुमना नेचुरल रिजर्व के प्रवास उपरान्त वहां के प्राकृतिक सौन्दर्य और व्यवस्थाओ को देखते हुए ठीक उसी तर्ज पर एक नेचर रिजर्व गुरुग्राम में विकसित किये जाने की मंशा रखी। कान्हा टाइगर रिजर्व के प्रवास उपरान्त वे कान्हा के वन्यप्राणी प्रबंधन से अत्यन्त प्रभावित हुये और अधिकारियों एवं कर्मचारियों के काम की भूरी–भूरी प्रशंसा की।

22 वीं राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन

वन विभाग में खेलों की विधिवत शुरुआत वर्ष 1992 से हुई जब भारत सरकार द्वारा अखिल भारतीय वन खेल कूद प्रतियोगिताएं प्रारम्भ करने की घोषणा की गयी। इन खेलों में भाग लेने के लिए प्रदेश में चयन प्रक्रिया के तहत राज्य स्तरीय खेल कूद प्रतियोगिता की नींव पड़ी। इस वर्ष प्रदेश के 16 वृत्तों

में प्रतियोगिताएं सम्पन्न हुई। इन प्रतियोगिताओ में एथलेटिक्स, क्रिकेट, हॉकी, फुटबॉल, वॉलीबॉल, बास्केटबॉल, कबड्डी, रस्साकसी, टेबल टेनिस, कैरम, शतरंज. ब्रिज, बिलियर्ड्स, स्नूकर, गोल्फ, तैराकी, भारोतोल्लन, शक्तितोलन, रायफल शूटिंग एवं स्क्वाश को शामिल किया गया है। वृत्त स्तर एवं मुख्यालय से चयनित लगभग 450 खिलाड़ियों द्वारा 22 वी मध्यप्रदेश राज्यस्तरीय वन खेलकूद प्रतियोगिता में हिस्सा लिया गया जो की दिनांक 23 से 26 नवम्बर तक टी. टी. नगर स्टेडियम भोपाल में आयोजित किये गए। इन खेलों में विजयी खिलाडियों में से ही चयनित खिलाडियों द्वारा 23 वीं

अखिल भारतीय वन खेलकूद प्रतियोगिता में भाग लिया जायेगा। अभी तक आयोजित कुल 22 अखिल भारतीय वन खेल कूद प्रतियोगिताओं में मध्यप्रदेश को 5 बार प्रथम स्थान, 12 बार द्वितीय

स्थान एवं 4 बार तृतीय स्थान प्राप्त हुआ है। 23 वी अखिल भारतीय वन खेल कूद प्रतियोगिता दिनांक 07 से 11 जनवरी 2017 से तेलंगाना राज्य के हैदराबाद में आयोजित की जाएंगी।

राज्य स्तरीय वन खेलकूद प्रतियोगिता के भव्य समापन समारोह में खिलाडियों द्वारा परेड का अच्छा प्रदर्शन किया गया। माननीय वन मंत्री द्वारा वनकर्मियों को खेल कूद के द्वारा फिट रहने का संदेश देते हुए वन सुरक्षा को समर्पित भाव से करने का उत्साहवर्धन किया गया। इस मौके पर माननीय मंत्री एवं वरिष्ट अधिकारियों द्वारा पारितोषक वितरण कर राष्ट्रीय खेलों में अच्छे प्रदर्शन हेतु शुभकामनाएं दी गई।

विभागीय गतिविधियां

प्रदेश में हरियाली महोत्सव के तहत आठ करोड़ 10 लाख पौधों का रोपण :– प्रदेश में इस वर्ष हरियाली महोत्सव के तहत विभाग के प्रयासों से लगभग आठ करोड़ 10 लाख पौधों का रोपण किया गया है। विभागीय रोपण के साथ संयुक्त वन प्रबंध समितियों एवं वन विकास निगम द्वारा भी रोपण कार्यक्रम किये गये।

साल बीज – अराष्ट्रीयकृत वनोपज घोषित :– राज्य शासन के आदेश दिनांक 25 अक्टूबर, 2016 द्वारा मध्य प्रदेश में साल बीज वनोपज को विनिर्दिष्ट (राष्ट्रीयकृत) वनोपज से हटाकर अराष्ट्रीयकृत वनोपज घोषित किया गया है।

Sameeta Rajora, CCF (Finance and Budget) was felicitated by the RCVP Noronha Academy of Administration & Management, Madhya Pradesh for her contribution as Visiting Course Director for the 91st Foundation Course for the All India and Central Civil Services Group 'A' Officers which was conducted from 29th August 2016 to 9th December, 2016.

Gender Budgeting Cell created in the department to emphasize gender sensitive budgeting .

राज्य लघु वनोपज संघ को भामा शाह पुरस्कार :– राज्य लघु वनोपज संघ द्वारा वर्ष 2012–13 में सर्वाधिक वेट कर जमा करने के उपलक्ष्य में वाणिज्यिक कर विभाग द्वारा ''भामाशाह पुरस्कार नियम 2008'' के अंतर्गत पांच लाख रूपये का पुरस्कार प्रदान किया गया है।

मुख्य वन संरक्षक सम्मलेन संपन्न : दिनांक 20 अक्टूबर 2016 को होटल पलाश में मुख्य वन संरक्षक सम्मलेन का आयोजन हुआ। प्रथम सत्र में माननीय मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश द्वारा दीनदयाल वनांचल सेवा का शुभारम्भ किया गया। द्वितीय तकनिकी सत्र के प्रथम चक्र में वन अच्छादन की स्थिति, भूतपूर्व एवं वर्तमान स्थिति का तुलनात्मक विश्लेषण, चुनौतियां, आने वाले 15 वर्षो की परिधि में विकास हेतु तथा जनोन्मुखी वन प्रबंधन, जनोन्मुखी वानिकी एवं हरे भरे वन मुस्कुराते जन पर प्रस्तुतीकरण एवं चर्चा की गयी। द्वितीय चक्र में जन समुदाय केंद्रित समस्त वानिकी गतिविधियॉ एवं प्रदत्त सहायता एवं लाभ पर प्रस्तुतिकरण एवं चर्चा की गयी।

"रिसर्च मेथडॉलॉजी" विषय पर प्रशिक्षण कार्यशाला :– अनुसंधान एंव विस्तार शाखा द्वारा भारतीय वन प्रबंधन संस्थान भोपाल में "रिसर्च मेथडॉलॉजी" विषय पर दिनांक 17 से 19 अक्टूबर 2016 तक एक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्धाटन भारत शासन के अपर महानिदेशक, वन श्री अनिल कुमार द्वारा किया गया। कार्यशाला में प्रदेश के 11 अनुसंधान एंव विस्तार वन वृत्तो के मुख्य वनसंरक्षक तथा सहायक वनसंरक्षक सम्मिलित हुये। कार्यशाला में वन अधिकारीयों कों अनुसंधान की विधाओं के संबध में प्रशिक्षण दिया गया। विभाग की अनुसंधान एंव विस्तार शाखा के अधिकारीयों के लिए इस विषय पर दिया गया यह प्रथम प्रशिक्षण है।

वनरक्षक प्रशिक्षण :– प्रदेश के 9 वन विद्यालयों मे दिनांक 1 अक्टूबर 2016 से कुल 610 सीधी भर्ती के वनरक्षकों का 6 माह का नियमित प्रशिक्षण प्रारंम्भ किया गया। इनमें से 6 वन विद्यालयो में दिनांक 13–10–2016 से 27–11–2016 तक कुल 124 सेवारत पदोन्नत वनपालों को 45 दिवस का नियमित प्रशिक्षण दिया गया। इसी तरह पदोन्नत वनपालों का एक प्रशिक्षण दिनांक 28–11–2016 से 11–01–2017 भी आयोजित किया गया।

राष्ट्रीय जैवविविधता कार्यशाला :– मध्य प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड द्वारा मध्यप्रदेश के वरिष्ठ वन अधिकारियों हेतु वानिकी जैवविविधता से संबंधित विषयों पर एक दिवसीय जागरूकता कार्यशाला दिनांक 19.10.2016 को प्रशासन अकादमी, भोपाल में आयोजित की गई। कार्यशाला के प्रारंभिक सत्र की अध्यक्षता म.प्र. राज्य जैवविविधता बोर्ड के अध्यक्ष एवं मुख्य सचिव म.प्र. शासन श्री अंटोनी जे.सी. डिसा द्वारा की गई। विशेष अतिथियों में श्री दीपक खांडेकर, अपर मुख्य सचिव, म.प्र. शासन, वन विभाग, श्रीमति कंचन जैन, महानिदेशक, प्रशासन अकादमी, भोपाल, डॉ. अनिमेष शुक्ला, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन बल प्रमुख) उपस्थित थे।

The Kanha-Pench Corridor Walk

Kanha and Pench are two of the finest protected areas in India. While, in general, connectivity between two protected areas is not satisfactory in the country, the Kanha-Pench corridor does support a tremendous potential for very promising ecological linkage for movement of wild animals, specially the tiger.

Under the concept of wildlife corridor management, it is very important to spread awareness about its importance and take local people, living all along the corridor, into confidence. This Kanha-Pench corridor walk, organized by WWF-India and undertaken by eminent conservationists, wildlife managers and enthusiasts is one such endeavor in the right direction. Participants included: Mr. Sanjay Kumar Shukla, Field Director, Kanha Tiger Reserve, Mr. Ravi Singh, Secretary General, WWF-India, New Delhi, Dr. Claude Martin, former Director General of WWF International, along with their supporting teams.

Wildlife Photography Contest

Theme : Wildlife Animals of Madhya Pradesh

A wildlife photography contest was organized by MP Tiger Foundation Society in the month of October, the results of which were declared in the month of November. The winner, Mr. Naresh Singh was awarded a prize of 50,000 rupees and nine consolation prizes of 5000 rupees each were also given away.

In the same contest the top three photographs which received maximum likes on Facebook were awarded "Facebook Favourite Awards". The winner, Mr. Jitender Govindani was awarded a prize of 5000 rupees, the first and second runners up were given a prize of 3000 rupees and 2000 rupees respectively.

Photograph by Naresh Singh

Theme : Wildlife Habitats & Landscapes of Madhya Pradesh

This was a second wildlife photography contest organized by MP Tiger Foundation Society in the month of October, the results of which were declared in the month of November. The winner, Mr. Mohammed Kasim was awarded a voucher entitling him for a 2 nights stay at a hotel and Rs 20,000 -/ cash.

The top three photographs which received maximum likes on Facebook were awarded "Facebook Favourite Awards". Mr. Sarosh Lodhi with the maximum likes won the first prize and was awarded a cash prize of 5000 rupees.

Photograph by Jitender Govindani

Photograph by Mohammed Kasim

Photograph by Sarosh Lodhi

अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त भोपाल व्दारा आयोजित कृषि वानिकी सम्मेलन

वर्ष 2016 में अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त, भेपाल के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा व्यापक प्रचार–प्रसार कर उल्लेखनीय सफलता हासिल की गई। वर्ष 2016 में 717 कृषकों के द्वारा 2.40 लाख पौधे रोपित किये गये । इनमें से 97 कृषकों द्वारा 1000 से अधिक पौधे रोपित किये गये । निजी भूमि पर कृषकों द्वारा रोपण के अलावा अन्य शासकीय और अशासकीय माध्यमों से 5.00 लाख से अधिक पौधों का रोपण किया गया जिसमें अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त के कर्मचारियों एवं वनदूतों का योगदान सराहनीय रहा। इस कार्यक्रम में कृषकों एवं निजी संस्थान जैसे आई.टी.सी., ट्रायडेंण्ट, वर्घमान, महिन्द्रा समूह, भारतीय रेल, नगर निगम भोपाल, गायत्री पीठ आदि द्वारा सक्रिय सहयोग दिया गया ।

इस सफलता में सहयोग प्रदाय करने वाले कर्मचारी एवं कृषकों के सम्मान के लिये एक विशाल कृषि वानिकी सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें 1000 से अधिक पौधे रोपित करने वाले कृषकों एवं 10,000 से अधिक पौधे लगवाने वाले कर्मचारियों का सम्मान किया गया ।

Status Report - Tigers, Co-predators and Prey in Protected Areas of Madhya Pradesh, 2016

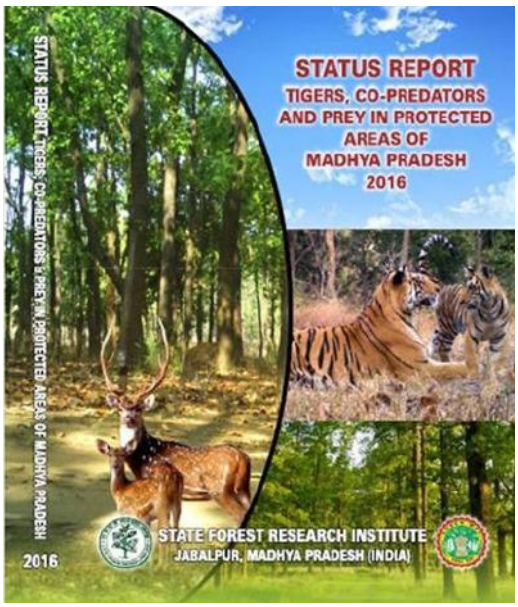

State Forest Research Institute published a report 'Status Report - Tigers, co-predators, and prey in protected areas of Madhya Pradesh 2016' which was released by the Honorable Minister of Forests, in a National Conference on Biodiversity held on 19th October at RCPV Naronha Academy of Administration, Bhopal. This was the result of a project undertaken by SFRI on "Monitoring and Evaluation of Wildlife and their habitats for sustainable Management and development in the Protected Areas of Madhya Pradesh."

The executive summary of the report mentions that during this study 14447.8 km square of protected area was surveyed for laying out 12787 transact lines with total walk effort of 8396.9 km and covering 9851.03 km square area for camera trapping. The overall population size of tiger is estimated to be 259 ranging from 251 to 331 (tigers aging less than one year not included).

The maximum tiger density was found in Pench Tiger Reserve which is 3.8 plus minus 0.5 per 100 km square followed by Bandhavgarh 3.6 plus minus 0.4 and Kanha Tiger Reserve 3.54 plus minus 0.4.

The ungulate densities have been estimated for major prey species i.e. chital, sambar, nilgai, wild pig, langur, gaur, chinkara, barasingha, barking deer and black buck. Narsinghgarh wildlife sanctuary, Kuno-Palpur wildlife sanctuary, Pench Tiger Reseve, Bandhavgarh Tiger Reserve and Madhav National Park were recorded as high chital density areas. In case of sambar, maximum density was recorded in Madhav National Park (8.5 plus minus 1.3/km square).

Gaur density was found to be maximum in Satpura Tiger Reserve (7.5 plus minus 4.2/km square) followed by Kanha Tiger Reserve (4.5 plus minus 1.1/km square) and Pench Tiger Reseve (2.5 plus minus 0.9/km square). In Bandhavgarh Tiger Reseve, though gaur has been reintroduced recently but density was not estimated due to the low sample size.

Hard Ground Barasingha was only detected on the line transects at Kanha Tiger Reserve. Though, Barasingha has been recently introduced in Satpura Tiger Reserve, but it was not detected on line transects.

Amongst all the protected areas of Madhya Pradesh, the density of black buck was found to be highest in Bagdara wildlife sanctuary (54.5 plus minus 26.5/km square).

Density of both, wild pig and nilgai was found to be the maximum in Kheoni Wildlife Sanctuary.

The result of the present monitoring and the generated database will facilitate protected area managers to understand the spatial distribution of tiger, co-predators and prey species.

Tiger population estimation (2016) of six Tiger Reserves of Madhya Pradesh has been compared with earlier tiger population estimation of 2014. The overall population is showing an increase in trend, though the gap period is too small to draw any conclusive inference.

The high abundance of prey and predators has been observed in most of the protected areas which illustrates the vitality of the faunal assemblage of the state.

अखबारों के आईने में

Creative workshop organised at Van Vihar

■ Staff Reporter

CREATIVE workshop was organised for students during Wildlife Week celebration at Van Vihar National Park on Thursday. Question-answer competition was also conducted for students of class IX to XII during the event. On October 7, along with fancy dress competition, open question, photography and painting exhibition and prize distribution will be held.

Wildlife Week is being organised at Van Vihar Rashtriya Udhyan from October 1 to 7. Various competitions, workshops and camps are being conducted during the week. The week was inaugurated with the painting competition.

Students from class I to class IV will make paintings on 'Tidiyan Mere Sapno Mein', students of class V to VIII on 'Mere Mohalle Me Ek Ped, Jo Mohalla He Vanya-Jantuo Ka', students of class IX to XII on 'Bharatiya Etihass, Sanskriti, Mithak Me Vanya-Prani', competitors of open category on 'Vanya Prani Ki Hatya Hamaare Bhavishya Ki Hatya' and disabled will make paintings of their own choice.

Bird watching camp was also organised at Van Vihar National Park which got good response. During the week, bird watching camp was organised on October 2,3,4, and 6 at 8.30 am. Bird watching camp concluded on Thursday. Further in , rangoli competition subjects like butterflies and less known wild animals of the State will take place.

Besides this, debate competition for school students was organised. Similarly, treasure hunt competition, spontaneous speech competition and debate competition for college students was also organised. Moreover snakes exhibition and lecture and workshop on 'Paryavaran Swachchata Mein Gidhdhon Ki Bhoomika, photography, teachers debate competition, teachers workshop on teachers' role in conservation of wild animals were organised.

Further school debate competition on subject 'Sanrakshit Kshetro Mein Badhta Paryatan Vanya Praniyon Ke Liye Ghatak and extempore on wildlife issues were held.

Main focus of Wildlife Week is to create awareness among public especially youth towards wildlife conservation.

Students observing wildlife environment closely during Wildlife Week celebrations at Van Vihar.

जैव विविधता एवं पर्यटन के क्षेत्र में प्रदेश बन सकता है अव्वल : मंत्री दवे

सम्मान | वनमंत्री रोजवार ने विजेता खिलाड़ियों को किया पुरस्कृत

लहारपुर में स्थापित होगी वन अकादमी: वनमंत्री

काले हिरण के 6 शिकारी बंदूक, कार सहित धराए

जबलपुर स्टेट फॉरेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट की ताजा रिपोर्ट से हुआ खुलासा

पेंच पार्क में बाघों की संख्या 44 से बढ़कर 53 हुई

ALLIANCE FRANCAISE DE BHOPAL IS HOSTING AN EXHIBITION ON GOND ART

Bringing alive the forest

ARTISTS
The gond artists who have exhibited their paintings include- Rameshwar Durve, Durgesh Maravi, Santosh Maravi, Dwarka Paraste, Tamsiram Paraste, Manoj Tekam, Hiraram Urveti while those who have exhibited sculptures are Gangaram Vyam and Sukhanandi Vyam.

खुशहाल जीवन चाहिए तो पर्यावरण को बचाइए

देश में बनेंगे 10 और टाइगर रिजर्व! पर्यटकों को लुभाएगा एलीफेंट बाथिंग शो

NTCA approves release of Rs 136 cr for 17 tiger reserves

सर्वाधिक तीन संगठित अपराधों में शामिल है वन्य-प्राणी अपराध

दैनिक भास्कर 18 NOV 2011

बोलेरो चुराकर बेचते थे चोरी की सागौन, तीन पकड़ाए

आरोपियों से छह बोलेरो व एक तूफान गाड़ी जब्त

निमाड़ का नीम वैभव पुन: लौटेगा, रोपे जाएंगे नीम के पौधे

Bandhavgarh Park sees rise in domestic tourists this season

दुनिया के भू रकबे का भारत में 2.4 प्रतिशत भाग है, इसके बावजूद यहां सभी ज्ञात प्रजातियों का 7-8% हिस्सा मौजूद है

जैवविविधिता का संरक्षण जरूरी

मुकुंदपुर में बाघों का नया जोड़ा

प्रशंसा एवं पारितोषक

Shri Sreenivasa Murthy, Rangaiah, IFS awarded the Madhya Pradesh Gaurav Samman, 2016

Sreenivasa Murthy, Rangaiah is a serving Forest Officer of Indian Forest Service (1987 batch) in the state of Madhya Pradesh.

As Field Director, Panna Tiger Reserve, he was the team leader that revived the Panna tigers from zero to 32 by implementing world famous Panna Tiger Reintroduction between 2009 and 2015. He opened up a new window of Tiger Conservation by successfully re-wilding two orphaned tigers whose mother got killed when they were just 30 days old. He successfully re-introduced six female tigers from different Tiger Reserves of MP at Panna who achieved 100% breeding success among all reintroduced female tigers. He domesticated a semi-wild elephant in 2011. He followed the path of 'Tiger Conservation with People's Support' at Panna. During his tenure Panna Tiger Reserve got the "Award of Excellence in Active Management" from NTCA for three consecutive years in 2012, 2013 and 2014 and WII-NTCA ranked Panna Tiger Reserve as 'Very Good' in their Management Effective Evaluation in 2010 and 2014. At Panna he started an innovative ongoing Nature Awareness programme, "Panna Nature Camps" for locals and completed 100 such camps.

For his services in Panna Tiger Reserve, for his role in re-establishing the tiger population, in taming of wild elephants and vulture conservation, Mr. R. Sreenivasa Murthy has been awarded the prestigious Madhya Pradesh Gaurav Samman 2016 by the Honourable Chief Minister of Madhya Pradesh on 1st Nov 2016, the foundation day of the state.

He has also received the following awards :

1. 'Baagh Mitra 2011' Award from WWF-India and PATA in 2012
2. RBS Earth Hero Award in 2015.
3. Medal and Award of Excellence in 2016
4. Selected for CM's Excellence Award Madhya Pradesh Government in 2016.

श्री रितेश सिरोठिया को मिला "क्लार्क आर बाविन वाइलडलाइफ एन्फोर्समेंट अवार्ड 2016"

अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं एनीमल वेल्फेयर इंस्टीट्यूट एवं स्पेशीज़ सर्वाइवल नेटवर्क के द्वारा वन्यप्राणी अपराध नियंत्रण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु दिये जाने वाले "क्लार्क आर बाविन वाइल्डलाइफ एन्फोर्समेंट अवार्ड 2016" हेतु मध्य प्रदेश के युवा वन अधिकारी श्री रितेश सिरोठिया को दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सबर्ग शहर में अंतर्राष्ट्रीय संस्था CITES के 17वें COP सम्मेलन में सेक्रेटरी जनरल श्री जॉन स्केनलॉन के द्वारा दिनांक 4.10.2016 को पुरस्कृत किया गया। उल्लेखनीय है श्री क्लार्क बाविन संयुक्त राज्य अमेरिका के वन अधिकारी थे जिन्होंने अपने सेवाकाल में वन्यप्राणियों के अवैध व्यापार नियंत्रण हेतु उल्लेखनीय कार्य किया था। उन्हीं की याद में इस पुरस्कार हेतु एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर की ज्यूरी पूरे दुनिया भर में वन्यप्राणी अपराध नियंत्रण हेतु कार्य कर रही एजेंसियों के अधिकारियों में से उत्कृष्टतम कार्य करने वाले अधिकारी का चयन करती है तथा प्रत्येक तीन वर्ष में इस पुरस्कार की घोषणा करती है।

Other Awards & Commendations received by Shri Ritesh Sirothiya

- "Civil service day best officer award" in May 2015 at Chhindwara.
- Certificate of excellence "Pangolin case investigation' in August 2016 at Chhindwara.
- "State level Commendation certificate" for 'wildlife protection works' in Oct 2015 at Bhopal.
- "State level forest officer award" for 'breaking the national nexus of pangolin poaching and trading of its parts' in Feb 2016 at Bhopal.

हरित साहित्य

भारत का वन

वंदे मातरम् का शस्य शामल,
मैं ऋषियों का तपोवन हूँ।
धरती की प्राचीनतम् सभ्यता का पालना मैं,
मैं ही वेदों की ऋचाएं हूँ।
मैं भारत का वन हूँ।।1।।

आरण्यक मैं, उपनिषद मैं,
मैं कबीर का दोहा हूँ।
अश्वत्थ वृक्ष मैं गीता का,
मैं ही सीता का अशोक वन हूँ।
मैं भारत का वन हूँ ।।2।।

महाभारत का खाण्डव वन कभी,
कभी वृंदावन का गोवर्धन हूँ।
कालीदास का "ऋतु संहार" मैं,
मैं ही रसखान के रस की खान हूँ।
मैं भारत का वन हूँ ।।3।।

कभी मुझमें चुनती थी शबरी बेर,
मुझसे ही उठी थी क्रौंच की वह आर्त टेर।
शंकर की जटाए मैं,
मैं ही गंगा की गंगोत्री हूँ।
मैं भारत का वन हूँ।।4।।

सुजलाम्–सुफलाम अक्षय पात्र वन,
मलयज शीतल का वातानुकूलन।
वैद्य सुषेण का द्रोणागिरी मैं,
मैं ही लक्ष्मण का संजीवन हूँ।
मैं भारत का वन हूँ।।5।।

श्रीराम का तीर–कमान मैं,
मैं ही कान्हा की बांसुरी हूँ।
वीणापाणी की वीणा मैं,
शेरावाली का शेर हूँ।
मैं भारत का वन हूँ।।6।।

भवानीप्रसाद के घने जंगल मैं,
मै ही मैथिलीशरण की शरण हूँ।
मीर्जा गालिब की गजल मैं,
मैं ही जफर का कू–ए–यार हूँ।
मैं भारत का वन हूँ।।7।।

भाषाओं का श्रृंगार मैं,
मैं ही जीव विज्ञान की जान हूँ।
ग्रामीण अर्थशास्त्र का आधार मैं,
मैं ही लोक कलाओं की शान हूँ।
मैं भारत का वन हूँ।।8।।

जंगल नहीं तो जल नहीं,
जल नही तो जीवन नहीं।
बचपन का झूला मैं,
मैं ही वानप्रस्थ का स्थान हूँ।
मैं भारत का वन हूँ।।9।।

मुझबिन जलवायु में परिवर्तन,
मैं इस परिवर्तन का निदान हूँ।
मैं सुखकर्ता, मैं दुखहर्ता,
मैं विनायक का वरदान हूँ।
मैं भारत का वन हूँ ।।10।।

गडरियों की भेड़ों का ऊन मैं,
मैं ही रेशम की डोर हूँ।
पश्चिमी अंधानुकरण में घटता चीर मैं,
मैं गरीबों का फटा पैराहन हूँ।
मैं भारत का वन हूँ ।।11।।

अभय कुमार पाटील
अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक
(अनुसंधान विस्तार एवं लोकवानिकी), म.प्र.

नर्मदा गीत
(मध्यप्रदेश शासन द्वारा पुरस्कृत)

तेरी जय-जयकार, नर्मदा मैया तेरी जय-जयकार,
सब पर करती उपकार, नर्मदा मैया तेरी जय-जयकार।

रेवा हमारी जीवनदाता,
भुक्ति-मुक्ति की माँ है प्रदाता।
तेरे केवल दस्श मात्र से,
तर जाते नर-नार।। नर्मदा मैया तेरी जय-जयकार ...

कल-कल बहती, नित नव रहती,
जन-जन का माँ, पोषण करती।
माँ करती हैं भक्तजनों को,
भवसागर से पार।। नर्मदा मैया तेरी जय-जयकार ...

मैकलसुता को स्वच्छ रखें हम,
यह संकल्प अभी कर लें हम।
इस पृथ्वी पर रेवा माँ है,
जन-धन का आधार।। नर्मदा मैया तेरी जय-जयकार ...

रेवा का संरक्षण करना,
माँ को सदा निर्मल है रखना।
हम सब माँ की सेवा करेंगे,
नित-नित बारम्बार।। नर्मदा मैया तेरी जय-जयकार ...

गीतकार
डॉ. शैलेन्द्र मिश्रः
आ. श्री कृपाशंकर मिश्रः

Ecotourism

Sites Near Bhopal

Madhya Pradesh, often called the Heart Of India, is endowed with rich and diverse forest resources. Madhya Pradesh is a state which has huge potential for ecotourism and in the process it not only can generate huge amount of funds for conservation programs but can also provide economic benefits for the communities living in remote areas.

Madhya Pradesh Ecotourism Development Board, an autonomous organization in the forest department of the Government of Madhya Pradesh has taken steps to link the tourists who wish to experience powerful manifestations of nature and local traditions with the local communities. Some ecotourism destinations around Bhopal are :-

SAMARDHA JUNGLE CAMP

Samardha fits perfectly as a weekend getaway. Samardha, an eco-tourism destination that tantalizes with its cultural experiences, treks to dams and waterfalls and showers you with adventure activities such as river crossing and mountain biking. Go aim for the bull's eye as you attain a focused state with archery or just let the adrenaline pump up your spirits with Mountain Biking through the jungle terrains as you experience the culture and even the silence broken by the sweet sounds of birds. As you camp in the open forest area, you are graced with a mix of leisure and culture, adventure activities and mountain biking treks! Its no luxury camp, but it has all the ingredients to take you far away from your everyday life into a dream world full of nature and adventure while you enjoy the taste of local cuisine too.

Activities You Can Enjoy In Samardha

- Trekking
- Walk To The Rock
- Nature Walk/Bird Watching
- Mountain Biking
- Rope Based Activities
- Archery
- Paint Ball
- Bullock Cart Ride
- Kayaking

Kerwa Jungle Camp

Kerwa Jungle Camp and Adventure Sports will offer you an enriching experience to cherish! Kerwa is well-endowed with natural and cultural assets that grace you with adventurous activities and scenic forest greenery. The adventure and jungle camping experience at Kerwa brings forth a mix of fun and pleasure amidst the rocky terrains, the verdant settings and the captivating wildlife that inhibit it. Developed as an ecotourism destination, Kerwa breathes into you its tranquility and liveliness to revive, rejuvenate and unwind and offers a spell of adrenaline rush too.

Activities To Enjoy In Kerwa

- Bird watching
- Trek to the Kerwa Dam
- Paintball
- Rappelling
- River Crossing
- Sky Zipping with South-East Asia's longest twin zip line
- Local cuisines such as *Dal Baffle, Dal Bhati and Mahua ka Cheela*

Kathotiya, Bhopal

Kathotiya Jungle Camp and Adventure Sports will offer you a unique romantic experience that will bring together minimalist living with enriching natural wealth and exciting adventure sports. You may appreciate the prehistoric rock paintings amid a real jungle experience.

The adventure and jungle camping experience at Kathotiya Forest includes :-

- Bicycling
- Hiking,
- River-crossing
- Rappelling

Promotions and Retirements

भारतीय वन सेवा के अधिकारियों की पदोन्नती (अक्टूबर-दिसम्बर)

क्र.	अधिकारी का नाम	पदोन्नती उपरांत नवीन पदस्थिति
1	श्री बृज मोहन सिंह राठौर	Chief Policy Advisor, ICIMOD, काठमांडु, नेपाल
2	डॉ. राकेश कुमार गुप्ता	प्रधान मुख्य वन संरक्षक (उत्पादन), म. प्र. भोपाल
3	श्रीमती कमालिका मोहन्ता	मुख्य वन संरक्षक, अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त, जबलपुर
4	श्री एल. कृष्णमूर्ती	मुख्य वन संरक्षक, कार्य आयोजना, उज्जैन
5	श्री अजय कुमार यादव	मुख्य वन संरक्षक, कार्य आयोजना, इन्दौर
6	श्री हरि शंकर मोहन्ता	मुख्य वन संरक्षक, कार्य आयोजना, सिवनी
7	श्री आर. के. श्रीवास्तव	मुख्य वन संरक्षक, कार्य आयोजना, छतरपुर
8	श्री अशोक कुमार जोशी	मुख्य वन संरक्षक, कार्य आयोजना, छिन्दवाड़ा
9	श्री अतुल खेड़ा	मुख्य वन संरक्षक, कार्य आयोजना, बालाघाट
10	श्री कल्लू सिंह अलावा	मुख्य वन संरक्षक, अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त, इन्दौर
11	श्री सरपत सिंह रावत	मुख्य वन संरक्षक, कार्य आयोजना, खण्डवा
12	श्री टी. एस. चतुर्वेदी	मुख्य वन संरक्षक, कार्य आयोजना, शहडोल
13	श्री गुरू प्रकाश वर्मा	अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक
14	श्री अतुल कुमार जैन	अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक(उत्पादन)
15	डॉ. धमेद्र वर्मा	अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, राज्य वन अनुसंधान संस्थान
16	श्री सुनील अग्रवाल	अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक(भू–प्रबंध)
17	श्री के. रमन	अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक म.प्र. राज्य लधु वनोपज संध
18	श्री असीम श्रीवास्तव	अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक भारतीय वन्यजीव संस्थान
19	श्री चितरंजन त्यागी	अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, म.प्र. राज्य लधु वनोपज संध

भारतीय वन सेवा के अधिकारी जो सेवानिवृत्त हुए (अक्टूबर-दिसम्बर)

1 डॉ. राम प्रताप सिंह, प्रबंध संचालक, मध्यप्रदेश राज्य वन विकास निगम, भोपाल
2 श्री शमशेर सिंह, मुख्य वन संरक्षक, रीवा वृत्त
3 श्री जी. कृष्णमूर्ति, अपर प्रधान मुख्य वन सरक्षक
संचालक राज्य वन अनुसंधान संस्थान,जबलपुर
4 श्री ए.के बिसारिया, अपर प्रधान मुख्य वन सरक्षक, राज्य लधु वनोपज संध म.प्र.
5 श्री एम.एल. लाडिया, वन संरक्षक, उमरिया, (सा.) वनमंडल

Feedback, suggestions and contributions are welcome at dcfpracharprasar@mp.gov.in

Photograph by
D. P. Srivastava
(Wildlife Photography Contest)

Madhya Pradesh Forest Department
Satpura Bhawan, Bhopal - 462004